



BHARAT BHAVAN
INTERNATIONAL
BENINAY
OF PRINTS
Feb. 1989

आदरणीय रज़ा साहेब,
सादर चरण स्पर्श,

आपको यह दूसरा खत लिख रहा हूँ पहला
शायद आपको मिला नहीं। मैं तीन सप्ताह केरल
में रहा मैक्स मूलर भवन मद्रास ने एक कैंप
में आमंत्रित किया था। वहीं रहकर पहली बार मैंने
weaving सीखा और तीन सप्ताह में चार carpets
बनाए। एक अलग अनुभव था। चित्र बनाने से भिन्न
और पहली बार अपने को दूसरी तरह से जाना।

आपसे अपने चित्रों के बारे में कुछ जानना
चाहता हूँ। कुछ प्रश्न मेरे सामने हैं? क्या इस बार
मेरे सभी चित्र आपको पसंद नहीं आये? मुझे लगता
है- ऐसा नहीं है, आप बहुत ध्यान से चित्र देखते
हैं- और आपने मेरे सभी चित्र देखे हैं फिर भी
आपने मुझे कहा कि मेरे पुराने चित्र बहुत अच्छे थे।
मैं अपने उन्हीं चित्रों का विस्तार इनमें पाता हूँ
और आपने भी पाया होगा। आपके चित्रों में भी एक

विस्तार लगातार नज़र आता है। मैं अपने चित्रों में कोशिश
 नहीं करता हूँ कि दोहराव न हो। पिछले आठ सालों से
 महं रयोगने का सिलसिला लगातार चलता आ रहा है।
 गलीजों में हर बार कुछ दूसरा मेरे सामने होता है। क्या
 इस विस्तार की कोई गहराई है? क्या इस विस्तार का
 कोई समय है? क्या महं विस्तार वास्तव में विस्तार है?
 कहीं महं वापस लौटना तो नहीं? मैं कलें जाना चाहता हूँ?
 कहीं नहीं। तो महं क्या है जो बदलता है? समय? रंग?
 रेखाएँ? अवकाश? या फिर कुछ और? यदि महं कुछ
 और है तो मैं कुछ और को ही क्यों नहीं पेंट करूँ?
 महं कुछ और तो 'कुछ नहीं' है। किंतु तो चित्र बन रहा है।
 वह तो 'कुछ' है और दिख रहा है तो फिर मैं क्या
 कर रहा हूँ? कुछ नहीं। सिर्फ एक कर्म। मैं चाहता हूँ
 महं जो कर्म किया जा रहा है वह कर्म कुछ ज़रूरी
 हो। एक प्रकार की हड़ता के लिये तमाम प्रकार की
 अनिश्चितता की जरूरत है और शायद नहीं इन चित्रों
 में प्रमुखता से उभर कर आई है। इस बार के सारे
 चित्र एक अनिश्चित स्थिति में हैं। मैं चित्रों में उन्मुक्तता
 या स्वातंत्र्य नहीं होना चाहता हूँ बल्कि उदार होना
 चाहता हूँ। क्या महं रास्ता ठीक है? नहीं फिर एक प्रश्न
 खड़ा होता है कि क्या ठीक है और क्या गलत। महं
 एक ऐसी स्थिति है जहाँ किसी भी प्रकार का निर्णय

लिखा जाना उस स्थिति विशेष के साथ अभ्यास करना होगा।
 जो आज ठीक है वह गलत हो जाता है। जब आने तक।
 ठीक इसके उल्टा भी होता है। इन दोनों स्थितियों में
 किसी को भी अवस्थित करते ही हम उसके दूसरे पक्ष
 के साथ अभ्यास करते हैं इन दोनों के बीच या बाहर
 कि स्थिति मुझे उचित जान पड़ती है। दरअसल यह
 सही और गलत का दृष्टिकोण भी आभाती है। ब्रिटिश
 साम्राज्य की यह दृष्टि आज इतने गहरे जा चुकी है
 कि हम अपनी ^{संस्कृत} नैति .. नैति .. वेद वाक्य को
 भूल चुके हैं। यहाँ कुछ भी अंतिम नहीं है। कुछ भी सत्य
 नहीं है। फिर मेरी मुश्किल यह है कि यहाँ पुनः कर्म स्थापित
 होता है और इसी कर्म को 'उदार' करना उसे एक प्रेमी
 में बदलना है। अतः यह चिन्ता उस भाव विशेष के गगदीक
 पहुँचते हैं या नहीं? यह आपसे जानना है। इसमें यह
 हो सकता है कि कुछ समय के लिये मैं अपने इस
 विचार को रंग, अवकाश आदि अन्य की प्रेमी में
 बाँधकर रखूँ। वह इस बार के चिन्तों में नहीं था। यह
 किया जा सकता है। यह भी किया जा सकता है कि शुरू
 से ही एक अनिश्चितता को गगल दे दी जाय और वह
 जिस भी तरह से अपनी गगल बनाएँ बनने दें। आप
 इन बातों पर मुझसे ज्यादा अच्छे से विचार करते रहे हैं।
 आप मुझे बतायें कि क्या हो?

अब कुछ दूसरी बातें। भारत भवन में कुछ हो नहीं रहा है।
 नई सरकार ने अन्तर्राष्ट्रिय व्यापक प्रदर्शनी रोक दी है। उन्हें
 कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि इस संस्था का क्या करें।
 आश्चर्यजनक रूप से हिन्दुस्तान के सभी चिंतकों ने अपने
 लाभ स्वीच लिखे हैं। भारत भवन के जिस मंच पर से
 स्टीफन स्पेन्डर, लेलुष, अरोय, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा ने
 अपनी कविताएं पढ़ी थीं वहीं से रमानाथ अवस्थी और वशिष्ठ
 ने इस वर्षगांठ पर अपनी कविताएं पढ़ी। चारों तरफ असहमति
 व्याप्त है। किसी भी सलाहकार समिति का गठन नहीं हुआ
 है अभी तक कोई न्यासी भी नियुक्त नहीं किया गया।
 तीन माह में दो सचिव बदल चुके हैं। किसी को कुछ पता
 नहीं है। यह असहमति पूरे विश्व की है। चारों तरफ हिंसक
 वातावरण है। हिंसा मानव नियति बनती जा रही है। हिंसा को
 मानव एकमात्र सत्य मान रहा है। लाखों लोग मारे गये
 पेट्रोल की कीमतों के लिम्बे। कुछ विजेता हैं, किन्तु वास्तव में
 वह विजेता नहीं हैं जो जीता है। जो हारा है उसने अविजित
 होना 'जाना' है और मेरी नज़र में यह जानना उभादा महत्वपूर्ण
 है। जीतने का मुख्य क्षणिक है। हारने का दुख उसे वह
 सीखाता है जो वह लगातार जीतकर भी नहीं जान सकता।
 दुख जीवन भर साथ रहता है। सुख जलसा बढ़ाता है।
 जलसा का अंत नहीं है और इसी से हिंसा का जन्म होता है।
 दुखी विनम्र है। कलाकार दुखी है। विजेता सड़कें बनवा
 रहा है। उसे पता नहीं कि उसने क्या जीता है?

इस वर्ष बम्बई के USIS ने अमेरिकन MAA संस्था के एक कार्यक्रम के लिये मेरा नाम नामांकित किया है। उन्होने बम्बई प्रदर्शनी देखकर ही यह निर्णय लिया होगा। पूर्व में नलिनी मलानी और प्रभाकर वर्मा को इसी कार्यक्रम में उन्होने नामांकित किया था और यह दोनों कलाकार गये थे। पूरे विश्व में ये पहल कलाकारों को चुना जाता है। नामांकित करने वाले लोग पूरी तरह अपने पिछले अनुभवों के आधार पर आशान्वित हैं मेरे चुनाव के लिए। किन्तु मेरे पास भी अनुभव हैं बदकिस्मती का। वैसे मैंने उन्हें चाली सामग्री उपलब्ध करा दी है। इस बार मैं शुरू से ही तटस्थ हूँ। देखिये क्या होता है?

अशोक जी की पचासवीं वर्षशौं पर बहुत ही अच्छा कार्यक्रम हुआ। वागीश जी, कमलेश, कृष्णा सोबती, माधवी मुद्गल बुद्धादित्य मुखर्जी, नेमीचंद जैन आदि अनेक ख्यातनाम लोग आये थे। आप, रामकुमार, अमितावदास, शमशाद आदि कुछ सोलह चित्रकारों के काम की प्रदर्शनी भी सफल रही। मैंने एक चित्र 'माँ लौकरी' गढ़ आऊंगा, क्या लाऊंगा? कविता पर बनाई था था। वह भी था। चित्र आपको अगली बार दिखाऊंगा। बहुत सुन्दर कविता है। कविता में माँ के समस्त पुत्रों की विवशता बल्कि उसका पुत्र होना बहुत सुन्दर ढंग से चित्रित है। 'कुछ नली' की स्थिति। मुझे मेरी माँ आद आती है। बचपन से आज तक मैंने जाना नहीं है कि माँ क्या लेती है? माँ की यह कमी मेरी पीड़ा है। मेरी माँ बहुत पहले अपना मानसिक संतुलन खो चुकी है। वे आज भी हैं किन्तु नहीं हैं। मैं अक्सर यह सोचता हूँ कि जो व्यक्ति सामान्य

हैं उसका संसार 'संसार' है या जो व्यक्ति पागल है उसका संसार
संसार है। एक पागल व्यक्ति का अपना संसार होता है जिसमें
उसके लिये सबकुछ व्यर्थ है। कुछ भी तो नहीं होता है उसका अपना।
उसके बच्चे भी उसके नहीं हैं। वह तो कहीं और जी रहा है।
तो यह कौनसी गलत है जहाँ वह जी रहा है। हम सबने यह
पूरी तरह से भोगा है। तो मैं जानना चाहता हूँ कि हम कहीं
रहते हैं। मेरा पूरा बचपन दशता के इसी वातावरण में गुजर
में आगतक इससे नहीं उबर पाया। मैं से दूरी, मैं से एक
संवाद लीनता। अशोक ग्री लिखते हैं -

क्या मैं आकर कहूँगा

मैंने किन काटे हैं

क्या मैं बताऊँगा

कि मैं आया हूँ

क्या मैं तुमसे कहूँगा

स्वप्न हो मैं अन्त आ गया है

क्या मैं लौटूँगा

अपनी निर्गल आँखों में अपमान भरे

जो अब हर रास्ते पर छाया है

आकाश की तरह

और तब,

क्या तब तुम पहली बार पहचानोगी

मेरे चेहरे में धुप